ं 'संस्कार' उपन्यास में चित्रित समाज

डॉ अनिता मिश्र

'संस्कार ' उपन्यास यू. आर. अनंत मूर्ति का प्रसिद्ध उपन्यास है। इस उपन्यास की मूल भाषा कन्नड़ है। इसका हिंदी में अनुवाद चंद्रकांत कुसनूर ने किया है। इसका प्रकाशन-काल सन 1965 है। यू. आर. अनंत मूर्ति ने इस उपन्यास में ब्राह्मणवादी संस्कारों और रूढ़िवादी परंपराओं पर कड़ा प्रहार किया है। उन्होंने समाज में मौजूद छुआछूत और अंधविश्वास को भी उजागर किया है। उन्होंने स्मार्त और माध्व ब्राह्मणों के बीच के विवाद को भी दिखाया है।

"संस्कार" उपन्यास तीन अध्यायों में विभक्त है। उपन्यास दो विरोधी चरित्र प्राणेशाचार्य और नारणप्पा के इर्द गिर्द घूमता है ।उपन्यास का आरंभ नारणप्पा की मौत की सूचना से होता है। नारणप्पा की रखैल चंद्री उसके मौत की सूचना दुर्वासापुर के प्राणेशाचार्य को देती है। नारणप्पा की मौत प्लेग से होती है। दुर्वासापुर के सभी ब्राह्मण आचार्य के घर पर जमा होते हैं। समस्या यह है कि उसका दाह- संस्कार कौन करेगा क्योंकि उसकी कोई संतान न थी। प्राणेशाचार्य कहते हैं ," कोई रिश्तेदार न हो तो और कोई ब्राह्मण यह कार्य कर सकता है।" नारणप्पा ने वेश्या चंद्री को अपने घर और जीवन में जगह दिया था। उसने ब्राह्मणत्व को त्याग दिया था, पर ब्राह्मणत्व ने उसे नहीं त्यागा था। प्राणेशाचार्य कहते हैं ",उसका बहिष्कार नहीं किया गया। शास्त्रों के अनुसार चुकी वह बिना बहिष्कृत हुए मरा है इसलिए वह ब्राह्मण रहकर ही मरा है । इतर जाति उसके शव को नहीं छू सकती है। "लेखक ने ब्राह्मणवादी संस्कार की ओर संकेत किया है। गाव का कोई भी ब्राह्मण उसका अंतिम-संस्कार करने के लिए तैयार नहीं होता है। चंद्री द्वारा दाह-संस्कार के लिए गहना देने के बाद सभी ब्राह्मणों की मानसिकता बदल जाती है। लक्ष्मणाचार्य ,गरुणाचार्य और दासाचार्य की नजर चंद्री के गहने पर है। सभी दाह-संस्कार का अधिकार पाना चाहते हैं। लेखक ने ब्राह्मणों के लोभी, ईर्ष्यालु और संकुचित मानसिकता को दिखलाया है। उन्होंने प्राणेशाचार्य के माध्यम से ब्राह्मण संस्कारों की परतों को खोला है। प्राणेशाचार्य कहते हैं ,"सनातन धर्म के अनुसार अग्रहार से शव ले जाने और संस्कार करने तक देवता- पूजा, स्नान, संध्या-वंदन, भोजन आदि कुछ भी नहीं किया जा सकता और क्योंकि उसका बहिष्कार नहीं हुआ था ब्राह्मणों के अतिरिक्त और कोई भी उसके शव को छू नहीं सकता।"दूर्वासापुर के ब्राह्मण लाश को गांव में ही छोड़कर दूसरे गांव में जाकर छिपकर भोजन करते हैं। लेखक ने ब्राह्मणों के दोहरे चरित्र को उजागर किया है।

यू. आर. अनंत मूर्ति ने प्राणेशाचार्य और नारणप्पा दो विरोधी चरित्रों को आमने सामने रखकर ब्राह्मणवादी संस्कारों पर प्रहार किया है। नारणप्पा ब्राह्मण होते हुए भी ब्राह्मणवादी संस्कारों का विरोधी था। उसने शालिग्राम को पानी में फेंक कर थूक दिया था। वह मुसलमानों

को अपने घर बुलाकर उनके साथ बैठकर शराब पीता था, मांस खाता था। गांव वाले उसे समय-समय पर समझाने का प्रयास करते थे, लेकिन वे उससे डरते भी थे। उसको जाति से बहिष्कृत करने का साहस ब्राह्मणों में नहीं था ।वह ब्राह्मणों को चुनौती देता था। वह मुसलमान बनकर गांव मे रहने की बात कहता था। वह मंदिर में अछूतों का प्रवेश कराना चाहता था। वह दोहरी जिंदगी नहीं जीता था। वह जो कुछ भी कहता और करता था ,खुलकर करता था। उसमें अपने कर्मों को लेकर कोई पछतावा नहीं था। वह समाज की परवाह न कर वेश्या चंद्री के साथ रहता था। वह आजीवन आचार्य को चुनौती देता रहा और मरने के बाद भी। वह आचार्य का शिष्य था। दुविधाग्रस्त आचार्य नारणप्पा के दाह- संस्कार का समाधान स्वयं करने के बजाय धर्मशास्त्रों और पोथियों में खोजते रहे। वे चंद्री के साथ शारीरिक संबंध स्थापित करते समय दुविधा में नहीं थे। उस घटना ने उनकी मानसिकता को बदल दिया। वे उस पल को याद करके उत्तेजित हो जाते हैं और उसकी पुनरावृत्ति चाहते हैं। वे चंद्री के साथ संबंध को भी समाज से छिपाते हैं। वे उस घटना के लिए स्वयं को जिम्मेदार नहीं ठहराते। वे मानसिक द्वंद्व से होकर गुजरते हैं। वे चंद्री को पुनः प्राप्त करना चाहते हैं।

नारणप्पा उपनिषदों और पौराणिक ग्रंथों की शिक्षा पर भी प्रश्न चिन्ह लगाता है। उसका मानना है ,आश्रम में युवाओं से ब्रह्मचर्य की आशा की जाती है पर शिक्षा उन्हें किस विषय की दी जाती है ? नारणप्पा प्राणेशाचार्य की शिक्षा को युवाओं के शील को बर्बाद करने के लिए जिम्मेदार मानता है। वह आचार्य से कहता है ,'"आप रस और कामाख्यानों से पूर्ण पुराणों का पाठ करते हैं किंतु उपदेश देते हैं नीरस जीवन जीने का" । नारणाप्पा का तर्क प्राणेशाचार्य को सोचने के लिए मजबूर करता है।

लेखक ने दिखाया है कि विधवाओं की संपति हड़पने वाले ब्राह्मणों की भी समाज में कमी नहीं है। नारणप्पा ऐसे लोगों को ब्राह्मण के रुप में अस्वीकार करता है। वह प्राणेशाचार्य से कहता है, विधवाओं की जायदाद हड्पने वाला, जादू-टोना करवाकर दूसरों की बुराई चाहनेवाला गरूड आपकी द्रिष्टि में ब्राह्मण हैं न"

अनंत मूर्ति ने उन संस्कारों की ओर संकेत किया है जो ब्राह्मणों के अंतर्मन में जड़ जमाए हुए हैं ।ब्राह्मण उस संस्कार से बाहर नहीं निकल पा रहें हैं। यह विडंबना ही है कि जीवन भर नास्तिक रहने वाला नारणप्पा भी बेहोशी की हालत में ईश्वर को याद करता है। संस्कार की जडें अंतर्मन में गहरे जमी होती है जिससे मुक्त होना आसन नहीं होत।

प्राणेशाचार्य की बात सभी ब्राह्मण सुनते और मानते हैं क्योंकि वह आचार्य हैं। वह एक रुग्ण स्त्री से विवाह करते हैं और उसकी सेवा करते हैं । पत्नी की सेवा आचार्य के लिए मुक्ति-मार्ग था। रोगी पत्नी उनके लिए त्याग की वेदी थी। वे स्त्री सुख से वंचित रहे। पत्नी से उन्हें कोई शिकायत

नहीं थी। उन्होनें स्वयं उस जीवान को अपनाया था। चद्री के साथ शारीरिक संबंध स्थापित करने के बाद पहली बार पत्नी असुंदर लगती है। आचार्य सम्बंध के बारे में स्वयं गांव वालों को नहीं बताना चाहते । चाहते हैं कि चंद्री घटना के बारे में गांव वालों को बताये ।वे गांव वालों का सामना नहीं करना चाहते हैं ।पत्नी की मृत्यु के बाद वे उसका दाह संस्कार करते हैं और गांव से पलायन करते हैं पर वे नारणप्पा के अंतिम संस्कार के बारे में नहीं सोचते हैं। वे परिचित लोगों का सामना करना नहीं चाहते हैं ।गाव से पलायन के बाद वे किसी को भी अपना सही परिचय नहीं देते । परिचय छिपाने से लोग उन्हें साधारण ब्राह्मण समझते हैं, आचार्य नहीं जिससे उन्हें पीड़ा होती है। वे आचार्य के सम्मान को खोना भी नहीं चाहते हैं। ब्राह्मण से समाज को अपेक्षा होती है। ग्वाला चाहता है कि वे उसके परिवार के लिए मंत्र का प्रयोग करें। आचार्य सोचते हैं" मैंने अपना सब कुछ पीछे छोड़ दिया है, समाज फिर भी मुझसे चिपका हुआ है और ब्राह्मण कुल में जन्म लेने के कारण मेरे जो-जो कर्तव्य बनते हैं, उनकी पूर्ति की अपेक्षा करता है। इससे छुटकारा पाना आसान नहीं।" वे झूठ बोलकर हर जगह से भागते हैं।

पुट्ट और प्राणेशाचार्य के बीच के संवाद से आचार्य का वास्तविक स्वरूप प्रकट होता है। आचार्य का द्वंद्व ब्राह्मणवादी संस्कारों पर विचार करने के लिए पाठक को बाध्य करता है। पत्नी की मौत के बाद आचार्य अन्तिम संस्कार संबंधी नियमों का पालन न करते हुए पुट्ट के साथ कॉफी पीते हैं, मंदिर में प्रवेश करते हैं और भोजन भी करते हैं पर उनका संस्कार उन्हें भीतर ही भीतर परेशान भी करता है। नारणप्पा का अंतिम संस्कार दलित भी करने से डरते हैं। उनका संस्कार भी उन्हें रोकता है। उन्हें नरक प्राप्ति का भय होता है। उपन्यास में चंद्री और पद्मावती ब्राह्मणवादी संस्कारों की परतों को खोलती हैं।

मृत नारणप्पा में लोगों को भूत – प्रेत नजर आता है। चंद्री भी उसे जलाये बगैर गांव छोड्ना नहीं चाहती है। उसे भी डर है कि वह भूत बनकर उसे सतायेगा।

लेखक ने "संस्कार" उपन्यास में दो विरोधी चरित्रों को आमने सामने रखकर ब्राह्मणवादी संस्कारों पर अप्रत्यक्ष रूप से प्रहार किया है।.....